29/11/1967 बुधवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तकदीर जगाकर आई हूँ, मैं एक नई दुनिया बसाकर लाई हूँ.....

ओम् शांति! रूहानी बाप बैठ करके रूहानी बच्चों से रूह–रिहान कर रहे हैं। रूह कहा जाता है आत्मा को। आत्मा का बाप है सुप्रीम रूह। तो इसको कहा जाता है– वो जिस्मानी रूह–रिहान होती है, ये रूहानी रूह–रिहान होती है; वो जिस्म से बात करते हैं, ये आत्मा से बात करते हैं। इसके बुद्धि में है कि मैं आत्मा से बात करता हूँ। वो जो टीचर्स हैं, वो समझते हैं कि हम मनुष्य से बात कर रहे हैं, मनुष्य मनुष्य से बात कर रहे हैं और यहाँ होती है परमात्मा की आत्मा से बात। तो आत्मा को पहले–2 लक्ष्य मिलता है अपने बाप का। किसके साथ रूह–रिहान करेगा? कौन रूह–रिहान आत्मा के साथ करते हैं? इसलिए पहले–2 आत्मा की समझानी मिलती है। अभी आत्मा की समझानी सिवाय परमात्मा के कोई दे नहीं सकता है। समझा ना बच्चे! देखो, ये समझते हो ना कि हम आत्माओं को यानी इन शरीर की आत्माओं को; क्योंकि वातावरण तो यहीं होता है ना, तो इस जीव की आत्माओं को बाप समझा रहे हैं और बाप भी कहते हैं– मैं तुम बच्चों से, रूहानी बच्चों के आत्माओं को (...), बच्चे जिस्मानी भी कह सकते हैं। ये कौन कह सकते हैं जिस्मानी बच्चे? ये ब्रह्मा कह सकते हैं; फिर वो जो रूहानी बच्चे, वो फिर रूह कह सकते हैं। तो तुम बच्चे समझते हो कि हमारे में चेन्ज बहुत आ गई है। अभी हम आत्माएँ जान गई हैं बाप को। आगे कभी भी कोई ऐसे नहीं कह सकते हैं मुख से कि हम आत्मा बाप को जान गई हैं और बाप के तरफ हम आत्मा की बुद्धि है, ये कोई नहीं है। इस सारे दुनियाँ में कोई भी आत्मा की यथार्थ रीति से; ये शिव की तो पूजा करते हैं; परन्तु जब तलक यथार्थ रीति से, बाबा कहते हैं ना– जो मैं हूँ, जैसा हूँ, ऐसा मुझे कोई जानें। तो पहले तो अपन के(को) जो है, जैसा है, वो जानना पड़े। तो अभी तुम तुम जिनको परमात्मा समझाते हैं और आगे जिस्मानी मास्टर/टीचर वगैरह समझाते थे, फर्क कितने का हो जाते हैं! इसको कहा जाता है– रात और दिन का फर्क; क्योंकि इस समय में ये भक्तिमार्ग की रात खत्म हो ज्ञान मार्ग का दिन शुरू होते हैं। तो फिर कहना पड़ेगा ना– रात और दिन का फर्क। ये जो हल्की और ऊँची चीज़ होती है या कोई भी कम दाम की या ऊँचे दाम की, तो ये अक्षर कहाँ से निकला है– रात और दिन का फर्क! ऐसे क्यों कहते हैं? फर्क तो कोई से भी मिलाय सकते हैं; पर रात और दिन से फर्क क्यों मिलाते हैं? क्योंकि रात और दिन में 'रात–दिन' का सच्च–पच्च फर्क है। दिन स्वर्ग हो जाते हैं और रात अंत, भक्ति का भी अंत हो जाते हैं; क्योंकि तुमको ज्ञान मिलता है भक्ति के अंत में और ज्ञान की आदि में। इसको कहा जाता है– कॉनफ्लुअन्स, सो भी इसको कहा जाता है– पुरुषोत्तम, ऑस्पिशस अंग्रेजी में इसको कहा जाता है, कल्याणकारी। भई कौन–सा कल्याण होता है तुम्हारा? क्या धन मिलता है? क्या होते हैं? कल्याण यही होते हैं कि मनुष्य से देवता, अपवित्र से पवित्र। तो ये सभी बच्चे जानते हैं ना कि बरोबर हम अपनी आत्मा को बिल्कुल नहीं जानते थे। हम देह को बहुत जानते थे, बहुत देह को शृंगारते थे, ये करते थे, ये करते थे। अभी तुम जानते हो कि हमको अपनी आत्मा को शृंगारना है। ये आत्मा काली बन गई है जो गौरी थी और कहते हैं बच्चे यहाँ, देखो–2 ये कोई कामी जास्ती होते हैं, तो उनको जो माँ–बाप होते हैं ना, वो कह देते हैं– तुम तो कोई कामी कुत्ते हो। कहते हैं ना! अच्छा, बाप भी इसी बात के ऊपर कहते हैं– काम महाशत्रु है। अर्थ भी तो चाहिए ना इन बातों का! पढ़ना तो गीता में बहुत सहज है कि भगवानुवाच– काम महाशत्रु है। उनका अर्थ कभी भी कोई नहीं समझते हैं। गीता पढ़ने वाले नहीं समझते हैं। जैसे देखो ग्रंथ, अमृतसर में जाओ, तो देखो अंदर दरबार में, इसको गुरू दरबार कहते हैं, उनमें वो ग्रंथ भी रखे हुए हैं और वे बड़े शृंगार से पटके–वटके अच्छे बैठ करके पढ़ते हैं वो ग्रंथ। समझाते तो कुछ भी नहीं हैं।...तो

बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं और बच्चे बैठे हैं यहाँ और बरोबर ये बच्चों का बुद्धि का योग शिवबाबा के साथ लगा रहता है और ये जानते हैं कि शिवबाबा जो परमधाम में रहते हैं, वो इसमें प्रवेश करके हमको नॉलेज दे रहे हैं। हमको अपनी परिचय भी करा रहे हैं जो हम नहीं जानते थे बिल्कुल ही। बिल्कुल ज़रा भी कोई भी नहीं जानते हैं। जैसे तुम्हारे बुद्धि में अभी है, ये स्टार भी है, ये भी जानते हैं। बाबा बिन्दी कहते, वो स्टार कहते, इसमें कोई फर्क नहीं रहते हैं; परन्तु वो ये नहीं जानते हैं कि ये जन्म कैसे, पुनर्जन्म कैसे लेते हैं। कौन–2 मैक्सीमम, कौन मिनी मिनीमम लेते हैं– इन बातों को नहीं जानते हैं और न इन बातों को जानते हैं कि आत्मा पतित होती जाती है, पुनर्जन्म लेती रहती है, पतित होती जाती है। कोई भी ऊपर में चढ़ नहीं सकते हैं। नहीं तो कई–2 तो तपस्या करते हैं या समझो कोई ऋषि–मुनि, ब्रह्मज्ञानी या तत्वज्ञानी, वो ऐसे बैठे हैं और बहुत उसके फॉलोअर्स हैं। देखते हैं कि ये बैठे–2 शरीर छोड़ दिया है। समझा ना! ऐसे छोड़ते हैं। तो वो कहाँ गया, वो तो उनको मालूम ही नहीं। वो तो बाप आकर समझाते हैं कि ये कोई भी संन्यासी वगैरह, ये कभी भी कोई वापस, जिसको कहा जाता है– वानप्रस्थ या निर्वाणधाम या शांतिधाम, कोई भी नहीं जाते हैं। वो मनुष्य थोड़े ही कोई जानते हैं। आ करके बोलते हैं– शांति कैसे मिले? वो है ना तुम्हारा एक छोटा किताब हाँ। शांति, क्या लिखा है उनमें ऊपर? (किसी ने कहा–मन की शांति) मन की शांति। अभी मन की शांति को वो तो जानते ही नहीं हैं, बिल्कुल ही (नहीं) जानते हैं; क्योंकि बाप ने समझाया है कि शांति तो आत्मा का धर्म है, स्वधर्म। आत्मा का स्वधर्म है ही शांत; क्योंकि जब अलग है शरीर से तो शांत है और उनका निवास स्थान भी शांतिधाम है। तो शांतिधाम के लिए शांति को ढूँढ़ना, इसके लिए वो आखानी है ना एक– गले में हार था, बाहर में ढूँढ़ता था यहाँ–वहाँ कि हमारा हार। कौन–सा हार गया है तुम्हारा? तो ज़रूर जेवर की तो बात नहीं है ना, भई शांति का हार। तो शांति तो तुम्हारे गले में पड़ी हुई है, अंदर में है। शांति कहाँ बाहर में थोड़े ही की है। ओम्, अहम् आत्मा, मेरा स्वधर्म शांत। तो बाबा भी ऐसे कहते हैं ना बच्चों को– हे बच्चो, रूहानी बच्चो! अपने स्वधर्म में टिको यानी अपने आत्मिक धर्म में टिको। अभी वो एक ही बात बाप ही आकर कहते हैं और कभी भी ये बात कोई समझाते नहीं हैं। बाप समझाते हैं बच्चों को, बच्चे समझाते हैं फिर और बच्चों को, भाइयों को। ऐसा और कोई भी नहीं है, ये वो पार्ट बजाना होता है ना बच्ची, ऐसा कभी भी कोई मनुष्य नहीं है, पढ़ेगा गीता, है ना कि अपने स्वधर्म में टिको यानी स्व माना आत्मा के धर्म में टिको। आत्मा का धर्म ही है शांत, चलो। शांति में टिको। तो बाप तो बच्चों को समझाते हैं– तो शांतिधाम में शरीर नहीं है। तो शांतिधाम में तो शांत ही रहते हो तुम वासी। तुम्हारे में बहुत हैं या ये दुनियाँ में बहुत मनुष्य हैं जो देखो कितना समय शांति में रहते हैं, शांतिधाम में। बाबा समझाया ना– मैक्सीमम और मिनीमम। तो मिनीमम वाले कितना समय शांति में रहते होंगे, तो उनको ये मालूम नहीं है ना, ये जो बाप बैठ करके समझाते हैं, तो ये समझ नहीं सकते हो, जो पीछे आएँगे वो तो वहीं रहते हैं ना परमधाम में, हैं ना वहाँ, इनकॉरपोरियल वर्ल्ड भी तो है तो ज़रूर ना! तो ज़रूर जबकि उनका टर्न आवे पिछाड़ी में तभी तो शांत में बैठे रहते हैं ना! तो देखो, ये कोई मनुष्य के बुद्धि में नहीं है कि जो आत्मा यहाँ जब तलक नहीं आई है तब तलक वहाँ अपने स्व–आत्मा के शांत धर्म में है। ये मनुष्यों के बुद्धि में नहीं है। ऐसी–2 ज्ञान की बातें, ये ज्ञान है, तो ज्ञान की कोई एक भी बात भगत के बुद्धि में नहीं हो सकती है। ज्ञान बिल्कुल ही अलग चीज़ है, भक्ति बिल्कुल ही अलग चीज़ है। ये भी बच्चों को समझाया है कि बरोबर सतयुग में भक्ति का नाम–निशान, बात भी नहीं, खशबूएँ भी नहीं, आवाज़ भी नहीं। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि हम भगत थे, हमको भगवान ने आ करके ये रास्ता बताया है मन्मनाभव का या ये ज्ञान से। नहीं, वहाँ कुछ

भी नहीं है; क्योंकि बाबा ने समझाया ना कि जो भी 84 का पार्ट हुआ, सो बस यहाँ आ करके तुम्हारा अभी पूरा होता है। पीछे वहाँ जब आएगा तो तुमको कुछ भी कुछ भी पता नहीं, बल्कि शांत हो। ऐसे नहीं कि तुमको उस समय में ये होता है कि हम अभी स्वर्ग में जाने वाला है, हम नर्क से आए हैं। ये ये भी बात ...., इमर्ज होता है वो पार्ट– जाऊँ। नीचे जाऊँ का इमर्ज होता है पीछे पार्ट। ये शास्त्रों में कहाँ–2 लिखा है ना– प्रभु को प्रेरणा आई कि अभी हम जाऊँ, सृष्टि रचूँ। है ना! तो आए रचूँ तब आई जबकि रचने का समय आया ना! तब, बाकी तो सृष्टि रची हुई थी ना! इतने दिन तो बाप को ख्याल में नहीं आएगा। बाबा कहते हैं मुझे तो ख्याल में नहीं आएगा कि मुझे अभी जाना है, जाकर नई सृष्टि रचनी है। नहीं, जिस समय में मुझे रचनी है, उसी समय में मुझे वो वो ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है सो एक्ट में आता हूँ। ऐसे भी नहीं, कोई ख्याल आया, ना, जो भी पार्ट है, वो एकदम रचनी शुरू कर देता हूँ। यहाँ आ जाता हूँ, मुझे रचना ही होता है। जैसे पार्ट बजाता है नाटक में, तो उन सबको घर छोड़ करके आना ही पड़ता है। उनको मालूम है कि हमको नाटक बजाना है फलाने टाइम, फलाने–2 मिनट। वो देरी नहीं करेंगे। फिर भी ये चैतन्य है। उसमें कभी देरी होवे, ये हो या थोड़ा 2–5 मिनट। इसमें ज़रा भी देरी का तो एक बात भी नहीं है। ड्रामा में कभी देरी हो सकती है शूट किया हुआ? वो चैतन्य ड्रामा में कभी देरी हो जावे, जभी कोई एक्टर आवे तब चुप करके बैठ जाते हैं। ये ड्रामा में ऐसा नहीं होता है। नहीं, ड्रामा में एकदम एब्सल्यूटली एक्युरेट। तभी बाप भी कहते हैं– मैं भी बिल्कुल ड्रामा के प्लैन अनुसार एकदम एक्युरेट टाइम पर आता हूँ, जबकि पुरानी दुनिया को नई बनना है। मूल बात ये– तमोप्रधान सृष्टि को सतोप्रधान बनना है। मैं हूबहू, वो एक सेकेण्ड भी देर से नहीं आता हूँ; क्योंकि फिल्म के बंधन में बाँधा हुआ हूँ या ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। तो जो बाँधा हुआ है ड्रामा के, उनको क्या कहेंगे, भई क्या सर्वशक्तिवान कहेंगे! वो खुद कहते हैं ना– मैं बांधा हुआ हूँ ये बंधन में। है ना! क्यों–2 ये बाप कहते हैं कि मैं बंधन में बांधा हुआ हूँ, कभी छूट नहीं सकता हूँ? क्योंकि बहुत आते हैं, वो कहते हैं कि मोक्ष मिले। मोक्ष मिल सकता है? तो बाबा कहते हैं– मैं ही खुद इस बंधन में ड्रामा के बांधा हुआ हूँ, वरी दूसरा कौन छूट सकते हैं! समझा ना! जब बाप ही बंधन में बांधा हुआ है इस ड्रामा के, तो और कौन छूट सकते हैं! और कोई भी नहीं छूट सकते हैं। इसलिए बाप समझाते हैं कि नहीं, मोक्ष जिसका नाम है, अरे बच्ची, ये भी शास्त्रों में लिखा हुआ है कि बौद्ध वानप्रस्थ गया, निर्वाणधाम में गया, फलाना ज्योति ज्योत में समाया, फलाना मुक्ति को पाया। ऐसे एक लिखा हुआ है भक्तिमार्ग के इन शास्त्रों में। अभी तुम ये सभी बातें नहीं मानेंगी। नहीं, कोई भी नहीं जा सकते हैं। सिवाय बाप के बिगर कोई रस्ता कौन बतावे? बाबा ने समझाया ना– ऋषि–मुनि भी कहते आए हैं– नेती–2, हम बाप को और बाप की इस रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं। बस जानना भी ये है ना, वास्तव में जानना ये चाहिए ना; परन्तु ये जानने की, तो कोई जानते नहीं हैं तो कोशिश ही क्या करेंगे! वो भक्ति ही भक्ति, उनको अपनी तरफ में भक्ति की यानी पार्ट ही है भक्ति का, सो भक्ति में घुसाते ही रहेंगे। ज्ञान है ही नहीं बिल्कुल जबकि बाप आवे। तो उसको अवतार कहते हैं ना, जबकि वो आवे। अवतार तो सभी लेते हो ना बच्चे! तुम सभी अवतार लेते हो। अवतार लेते हैं माना ऊपर से आय करके शरीर में प्रवेश किया, तो उसको अवतरिया, ऊपर से नीचे अवतरिया। तो अवतार तो तुम सभी हो; परन्तु ये फिर कौन हैं? ये है सारी पतित दुनियाँ को पावन बनाने वाले; इसलिए अवतार एक होता है। अवतार दूसरा कोई होते नहीं हैं हाँ। नाटकों में तो दिखलाते हैं ना– विष्णु अवतार, फिर वो विमान में वो ही शाल ओढ़ करके यहाँ चले आते हैं चित्र, मनुष्यों के। परन्तु नहीं, यूँ अवतार हो तो सभी हो नंबरवार। सब आते हो, अवतरते हो ये–2 पार्ट

बजाने के लिए। कोई भी वहाँ नहीं रह सकते हैं। देखो, नाटक होते हैं ना बच्चे, तो सब आते जाते हैं, पिछाड़ी में वो जो धनी होते हैं ना मुख्य, वो भी आ करके खड़ा हो जाएगा। पीछे वो बाजा–वाजा बजेगा, सब छूटेंगे उनको। सब छुट्टी ले लेगा, नाटक बंद हो जाएगा। पर्दा ही बंद हो जाते हैं। पिछाड़ी में सभी एक्टर्स हाज़िर होते हैं। तो ये बच्चों को अभी मालूम पड़ा कि हम सभी एक्टर्स, जो भी वहाँ के रहने वाले, बाप सहित सब ऐसे अभी यहाँ हैं। आते रहते हैं, ऐसे नहीं कि नहीं आते रहते हैं। अभी तलक भी आते रहते हैं, ये सृष्टि वृद्धि को पाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि ये ये 40–50 बरस कोई यहाँ थमते हैं। वो तो बच्चे सुनते भी हैं कि भई, एक–एक मिनट में या सेकेण्ड में या दिन में इतने मनुष्य पैदा होते हैं। वृद्धि तो होती रहती है, ये होती रहती है। कि जब बाप जाएगा तब फिर बारात भी जाएगा। नाटक में भी कायदा ऐसे है, जब सब आ जाते हैं मुख्य क्रियेटर–डायरेक्टर, तो वो जब आए जाएँगे आगे, तो उनके पिछाड़ी, लॉ ऐसे है, पीछे वहाँ तो शायद अगड़म–बगड़म करके चले जाते हैं और बुद्धि ऐसे कहती है। देखो, तुम्हारी बुद्धि सब काम कर रही है कि बरोबर ये–3 बिल्कुल ठीक है। पहले से तो बाप ही आते हैं, ऐसे ही कहेंगे ना बच्चे– बाप। शुरू कौन करेगा? बाप आएँगे ना! देखो, बाप आते हैं, तो ये अभी शुरू होते हैं ना! आय करके तुम बच्चों को रिज्यूविनेट करते हैं। काया कल्पवृक्ष समान, इसको ऐसे भी कहा जाता है– काया कल्पवृक्ष समान। कल्प की आयु 5000 बरस है। तो अच्छा, तुम्हारी काया आधाकल्प समान तो अमर बनाती है ना! तो कल्पवृक्ष की आयु 5000, तो आधाकल्प तुम्हारी आयु बढ़ा देते हैं; क्योंकि आधाकल्प तुम मरते ही नहीं हो। तो ऐसे कहा जाएगा ना– तो कल्पवृक्ष समान आयु। तो बच्चों को मालूम तो है ना बुद्धि में भी– कल्पवृक्ष आधा समय पवित्र रहता है, आधा अपवित्र रहता है। तो हो गया ना कि भई, काया कल्पवृक्ष समान अमर बनाय देते हैं। इसलिए इसका नाम भी रखा हुआ है– अमरलोक। अभी अमरलोक के लिए कथा चाहिए ना देखो! अमरलोक के लिए कथा चाहिए, तो मिला दी है। है ना! अभी ये मनुष्य तो नहीं जानते हैं ना; क्योंकि जैसे सत्यनारायण की कथा, नर से नारायण बनेगा, वो भी अमरलोक जाएगा। सतयुग को अमरलोक कहा जाता है; कलहयुग को मृत्युलोक कहा जाता है। अच्छा, वो फिर अमरकथा उसने सुनाई, शंकर ने सुनाई पार्वती को। अभी क्या, वो भी तो गीता हुई ना, वो भी तो गीता हुई ना; क्योंकि अमर यानी अमरलोक में जा करके बादशाही करेंगे ना! अमरलोक को तो यही कहेंगे ना! मृत्युलोक के अगेन्स्ट है ना नाम! तो अभी किसने गाई– अमरनाथ ने गाई, शंकर ने गाई या भला कृष्ण ने गाई? भई कहेंगे कि न शंकर ने गाई, न विष्णु, ये कृष्ण ने गाई, अरे फिर चाही ब्रह्मा ने गाई है। तो ब्रह्मा का तो नाम किसको भी पता नहीं है ना! बस, कृष्ण–3 चला आते हैं। कभी कोई भी नहीं जानते हैं कि नहीं, ये तो अमर बाबा ने गाई है– भगवानुवाच्य। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ता है कि नहीं, ये तो बाबा ने सुनाई। बाबा बैठ करके राज़ समझाते हैं। बाबा आते हैं बरोबर, समझा ना और फिर बाबा, बाबा भी है, इकट्ठा रहते हैं। बाबा इकट्ठा नहीं रहते हैं यहाँ? तो ज़रूर यहीं रहेंगे ना! बाप है तो यहाँ रहेंगे ना! घर में रहते हैं तभी तो जानते हो; परन्तु ये समझते हो बच्चे कि बरोबर बाप, जैसे ये बाप है, है ना, तो भई ये बाप है, इनमें आत्मा है ना बरोबर! तो आत्मा यहाँ आई हुई है, छोटे से बड़ी हुई है। बड़े को फिर बाप कह देते हैं। जबकि क्रियेटर बनते हैं ना, तब उनको बाप कहा जाता है। पहले क्या कहा जाएगा? पहले भाई कहा जाएगा या और कोई नाम होगा, भाई क्या कहेंगे, फलाना कहेंगे। जब क्रियेटर बनेंगे, हद के ब्रह्मा बनेंगे तब बाबा कहलाने लायक बनेंगे। नहीं तो 'बाबा' कभी कोई छोटे बच्चे को कहेंगे? नहीं। अच्छा, इनको तो सदैव 'बाबा' कहेंगे। भक्तिमार्ग में फादर–5 ही कहते रहते हो, और कुछ कह सकते हो तुम लोग? बच्चा कहेंगे? युवा कहेंगे? वृद्ध कहेंगे? नहीं, फादर–4

ही कहते रहते हो। इससे सिद्ध होते हैं कि ये पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। जो पुनर्जन्म में आवे तो वो वृद्धि को भी पावे ना, छोटे बच्चे से बड़ा बने ना! स्टूडेण्ट फिर टीचर भी है, फलाना भी है, टीरे भी है। तो इतना सभी सूक्ष्म में जाना चाहिए। अभी ये सूक्ष्म में जा करके एकान्त में, तभी ये खयालात आएगा ना! तभी तो तुम्हारा विचार–सागर–मंथन का वो दिखलाया ना कि वो रस्सी बांधी, वो सर्प को रस्सी बांधी, ये और कछुओं को भई वो मंथन के लिए लेके आए, ऐसे–2 लिखा हुआ है कहाँ। फिर उसमें से अमृत निकला। उसका कलश लक्ष्मी, लक्ष्मी तो यहाँ है नहीं, लक्ष्मी थोड़े ही बैठी हुई है यहाँ। नहीं, लक्ष्मी तो सतयुग में होगी। तो सतयुग में तो विचार–सागर–मंथन करके अमृत निकाला ही नहीं। लक्ष्मी तो वहाँ अमृत पी–2 करके और जा करके वो बनी। तो देखो, ऐसी–2 बातें विचार करेंगे, तो तुमको मालूम पड़े– ये तो सब झूठ ही झूठ है। भक्तिमार्ग में जो कुछ भी सुनते आए हैं, सत्य–2 करके माना गया है, वो सभी झूठ ही झूठ है। ऐसे अनेक बातें हैं, जो लगती नहीं हैं, हो ही नहीं सकते हैं। समझा ना! अभी रावण का भी कोई ऐसे चित्र थोड़े ही बनते हैं भला। रावण का तो बच्चों को समझाया ना– बच्चे, ये पाँच विकार जो हैं– काम–क्रोध, इनको छोड़ना है। अभी भस्म करने की तो बात बाबा नहीं कहते हैं ना! विजय बोलते हैं, विजय पहनो, इन पाँच विकारों के ऊपर विजय। ऐसे तो नहीं कहते हैं कि रावण को जीतेंगे। नहीं, एक निशानियाँ रख दी हैं मनुष्यों ने, हिन्दुओं ने। इस समय में रावण का राज्य है। तो इसलिए ये चित्र बनाय कर रखे हैं, सो भी भारत में ही हैं, और कोई जगह में नहीं हैं। है ना! ये रावण का और राम का ये युद्ध ये वगैरह–2– ये सभी यहाँ भारत में होते हैं वा भारतवासी जहाँ–2 जाते हैं, वहाँ जा करके ये रस्म–रिवाज़ निकालते हैं। नहीं तो कोई का भी दूसरे का धर्म नहीं है। है रावण–राज्य सारी दुनियाँ पर; परन्तु दूसरा कोई भी नहीं है जो रावण बनाय करके और उनको या रावण की ये मनावे। ये सिर्फ भारत में ही मनाई जाती है। क्यों? कि रावण भी भारत में पहले–2 और पहले–2 होते हैं ना बच्ची! रावण आते हैं, पीछे इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन आते हैं। इसलिए भारतवासी, भारतवासी फिर ये चीज़ें ले जाते हैं बाहर में। ये रस्म–रिवाज़ बाहर में जाकर, पीछे उसमें और–2 धर्म वाले भी मिल जाते हैं। किस्म–2 के धर्म वाले भी सब भारत में मिल जाते हैं। बाकी हैं नहीं कुछ भी ये बातें, कुछ भी बात। अभी बातें बाकी क्या जाकर बाप सुनाते रहते हैं। कि ये संगमयुग तो है ना बच्ची! ये जानते हो कि ये अभी ट्रांसफर होने का है। .....मनुष्य तो देखो कितना पांच है, कितना करोड़, पांच सौ करोड़ और कहाँ वो सतयुग में थोड़े, थे, ऐसे नहीं कि नहीं थे। थे, ये वृद्धि को पाए हैं। त्रेता में, द्वापर में, कलहयुग में वृद्धि को पाय–2 करके इतने हुए हैं। ये तो अभी समझ में आते हैं। नहीं तो ये खयालात कोई नहीं करते हैं। किसके बुद्धि में ये खयालात होती नहीं है। ये विचार–सागर–मंथन सिवाय तुम्हारे और कभी भी कोई नहीं करते हैं। ये सृष्टि बढ़ी कैसे? कब से बढ़ी? छोटी थी,...क्या हुआ उनका? छोटी भी सृष्टि थी, राजाई भी थी इनकी और वो कहाँ चले गए? किसको कोई, कोई ख्याल भी नहीं करते हैं, बस पूजते आते हैं। पता भी नहीं कि ये कब राज्य करते थे, अभी तलक भी बनते रहते हैं। ये मंदिर अभी तलक भी बनते रहते हैं, भगत बनाते ही रहते हैं। जब कोई ज्ञान में, तुम बनाएँगे मंदिर? तुम बनाएँगे अभी मंदिर कोई? नहीं, तुम ये चित्र बनाते हो मनुष्य को समझाने के लिए। वो चित्र बनाते हैं मंदिर कोई समझाने के लिए? किसको भी नहीं समझाते हैं; क्योंकि जानते ही नहीं हैं। खुद ही नहीं जानते हैं तो कैसे समझाएँगे! चित्र वही है जो तुम बनाते हो, कोई दूसरा तो नहीं है ना! वो लक्ष्मी–नारायण का चित्र, मंदिर बहुत खर्च कर–करके और किसको भी समझाय नहीं सकते हैं। तुम ये थोड़ा–सा खर्च करके अच्छे चित्र बनाय करके तुम इनकी ये जीवन–कहानी बैठ करके सुनाते हो सबकी। देखो, अभी तुम यहाँ बैठे हुए

हो, बरोबर तुमको बाप, बेहद का बाप, उसकी जीवन–कहानी, नाम–रूप, देश–काल जो तुम्हारे बुद्धि में है, दूसरे कोई में होगा? तुम सुनते रहते हो ना– भई, अर्जुन को भी बाप ने। अभी अर्जुन को गीता सुनाई और राजयोग सिखलाया और ये राजाई स्थापन की। उनको तो लाखों बरस हो गए। इनके कथन अनुसार भई गीता सुनाई और राजयोग सिखलाया, वो इनका राज्य हुआ। वो हो गया ताज, वो हो जाता सतयुग। सतयुग को तो लाखों बरस हो गया। ...तो जभी तुम अभी सुनते हो, तो बोलता है कि अरे, ये तो बिल्कुल झूठ है, हो ही नहीं सकते हैं। अभी नए–2 बना रहे हैं, लाखों बरस कैसे हो गए! तो देखो, गपोड़ा हो गया ना! बहुत–2 बड़ा गपोड़ा। तो भक्तिमार्ग में इतनी बड़ी झूठ, इतना गपोड़ा किसने बैठ करके बनाया? वरी पूछा जाता है– किसने बनाई भागवत गीता? भई व्यास, वरी फिर उसको भी भगवान! अभी व्यास तो देखते हो ना! कौन बैठे हैं यहाँ, हाँ इसको व्यास कहेंगे ना! ये बैठ करके बताते हैं ना! ये सभी ज्ञान बताते हैं ना! अभी तुमको वो तो नहीं लिखवाते हैं, ये भक्तिमार्ग के किताब तो नहीं लिखाते हैं ना! ये गपोड़ा मारते हैं ऐसे? नहीं, व्यास तो है बरोबर। जो भाषण करते हैं ना, उनको व्यास कहा जाता है। तो ये देखो इसने सभी सच बताया है और उसने सभी झूठ लिखा है शास्त्रों में। नहीं तो झूठ खण्ड होवे कैसे और फिर सचखण्ड बने कैसे? तो कहा जाता है ना बच्ची, भारत को सचखण्ड भी कहा जाता है, झूठखण्ड भी कहता। और कोई भी खण्ड को सचखण्ड और झूठखण्ड नहीं कहा जाएगा; क्योंकि यहाँ सतयुग को सचखण्ड कहते हैं। सतयुग और त्रेता में और तो कोई खण्ड होते ही नहीं हैं। इसलिए भारत को ही कहेंगे ना, सतयुग का सचखण्ड और चला आते हैं झूठखण्ड तक। अभी तो बच्चों के बुद्धि में बैठा ना, ये समझ आई ना– बरोबर हमारा जो ये भारत है, ये अविनाशी है; क्योंकि अविनाशी बाबा का अवतरण इस खण्ड पर होते हैं; इसलिए ये ये भारत कभी विनाश होते ही नहीं हैं। किसको जभी समझाते हैं कि भारत कभी(कब) विनाश होता ही नहीं है, और सभी विनाश हो जाते हैं। ऐसे बहुत हैं, मानते ही नहीं हैं। वाह! ऐसे कैसे हो सकते हैं? ये हज़ारों बरस की चीज़ें निकलती हैं धरती से, पुरानी–2 लाखों बरस की चीज़ें मिलती हैं। तो वो कहा ना ये ये शंकराचार्य ने कि जमीन को मल्टी–2 मिलियन ईयर्स हुए हैं। तो देखो, कुछ पता है क्या बोलते हैं; क्योंकि सुना तो है ना– बरोबर सतयुग को भई लाखों बरस हो गए। तो बाप बैठकर समझाते हैं– हियर मी एण्ड जज यूअर सेल्फ– ये ये शास्त्र राइट हैं या ये विद्वान राइट हैं? ये अथॉरिटी हैं या मैं अथॉरिटी हूँ? क्योंकि मैं तो सब समझाता हूँ ना! सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों वगैरह–3, हाँ इन सबसे (...)। तो ये सब भक्तिमार्ग के शृंगार हैं, सामग्री सब भक्तिमार्ग (की) और फिर अच्छी तरह से बताते हैं– जज करो ये ज्ञान कितना सिम्पुल और थोड़ा छोटा; जैसे– बीज। भई, बीज को तुम देखेंगे तो तुमको ज्ञान आ जाएगा ना! जिस–2 झाड़ का बीज देखेंगे, तुमको उसी समय में आएगा– इनसे ये ये लगाने से ऐसे छोटा हो करके, बड़ा हो करके, फिर इसमें आम आ जाएगा या केला आ जाएगा या फलाना। एक ही चीज़ आएगी, आम के झाड़ में कोई दूसरा थोड़े ही कोई आएँगे। नहीं, तो मनुष्य–सृष्टि के झाड़ में मनुष्य ही आएँगे; परन्तु वैराइटी धर्म, वैराइटी फीचर्स, वैराइटी शिकलें किस्म–2 की। तो देखो है ना बरोबर, कितनी वैराइटी है इनमें! इसलिए इनको विराट लीला, वैराइटी मनुष्यों की लीला कहा जाता है। तो अभी देखते तो हो ना, बुद्धि में तो आती है ना! अभी ये भी तुम्हारी बुद्धि में; क्योंकि अभी तुम लोग को ज्ञान मिला। दूसरा कोई की बुद्धि ये बातों में नहीं जाती है। तुम बच्चों को ज्ञान मिला कि बरोबर वैराइटी धर्म कैसे स्थापन होते हैं। बीज एक ही है बाप का। वैराइटी ये धर्म, शिकलें तो देखो कैसी–2 किस्म–2 की होती हैं! हैं मनुष्य ही मनुष्य। तो ऐसे तो नहीं होगा ना बच्ची कि कोई भी झाड़ होगा, उसमें आम होगा, तो कोई काला होगा, तो कोई कोई पीला होगा, तो कोई कीबा

होगा, तो कोई चित्था होगा। देखो–2 है ना सभी वैराइटी! ये सीदी लोग इतने काले होते हैं, झुण्ड वाले, जो तुम बच्चे भारतवासी कहाँ रात में 2–5 को देखो ना कहाँ जंगल में, तो परन्तु पता नहीं– ये कौन–सा भूत है, काला भूत, डर जाओ। परन्तु जहाँ ढेर–के–ढेर रहते हैं बिल्कुल ही, तुम देखते हो ना यहाँ आते हैं आजकल। आजकल आते हैं बहुत, तो फर्क है ना, फीचर्स में कितना फर्क है! पहले–2 तो देवताएँ हैं, वो तो गौरे ही आते हैं। ये पीछे पुनर्जन्म की सुनते हो, तभी कहते हैं कि सांवरे हो जाते हैं। अच्छा, और कोई किसको कहते हो– गौरा और सांवरा, श्यामसुन्दर? सिवाय एक कृष्ण के और तो कोई को कहो, और तो कोई धर्म वाले कोई को तो कहो, कोई को भी नहीं कह सकते हो। क्राइस्ट को भी ऐसे नहीं नाम देंगे कि श्याम और सुन्दर। बाकी वो लोग ये अवतार–ववतार तो बहुतों को मानते रहते हैं। वो तो हर एक देखो ठिक्कर–भित्तर को अवतार मानते हैं। अभी क्राइस्ट वगैरह का क्या हुआ! ढेर–के–ढेर हैं आजकल ये अपन को ईश्वर कहलाने वाले। तभी वो ईश्वर कहलाने वाले बहुत हैं, फिर तुम्हारे लिए भी कहते हैं– ये भी आए हैं ईश्वर अपन को मानने वाले। ब्रह्मा को भी भगवान मानते हैं। नहीं तो है तो नहीं ना, मानते तो नहीं हैं ना बच्ची! फिर देखो ये बनी, जैसे व्यास ने बनाया कुछ–न–कुछ ये झूठ, तैसे ये भी मुख से बनाते रहते हैं। तुम सुनते हो कभी मुख से कि ये अपन को, ये तो कहते हो– ये है बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत में मैं प्रवेश करता हूँ। तो ये मनुष्य नहीं समझ सकते हैं। तो अगर नहीं समझ सकते हैं तो तुम लिख दिओ फिर उनके ऊपर कि, वो भी लिखा हुआ है, श्रीकृष्ण के जो ये है ना, उसमें लिखा है– बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत में मैं प्रवेश करके फिर इनका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ। अभी ये लिखा भी तो हुआ है ना! तो बच्चे जब वो कहते हैं– ब्रह्मा भगवान...? अरे बोलो– ये देखो पढ़ो ना, इसमें क्या लिखा है! अच्छा, अच्छा, लिखत को छोड़ो, चलो भला झाड़ के ऊपर आओ। देखो जो ऊपर में है, पिछाड़ी में देखो जहाँ कलहयुग है ना, तहाँ पिछाड़ी में खड़ा है एकदम। कलहयुग में नहीं खड़ा हुआ है? पीछे यहाँ तपस्या करते हैं। तो ज़रूर पतित है ऊपर में पिछाड़ी में तमोप्रधान, सो सतोप्रधान के लिए भई ये योग सीख रहे हैं। अभी है ना, चित्रों में सब लिखा हुआ तो है ना! तो उनको ये समझाना चाहिए ना; परन्तु नहीं, बस ये जो सुनी–सुनाई, उसमें चले आते हैं। तो देखो, ये भारत में सुनी–सुनाई के ऊपर, ये तो तुम जानते हो कि सतयुग से लेकर त्रेता तक तुमको बाप ने ज्ञान दिया है, जिसके कारण तुम आधाकल्प तो, बाकी फिर होती है नई सुनी सुनी–सुनाई। वो सुनी–सुनाई के कारण तो देखो इतना वो बैठ करके रावण बनाया है इतना। पीछे देखो कितना शास्त्र बनाया है सभी फालतू। हैं तो नहीं ना कोई भी! अभी ये कलहयुग का है, अंत है। बाप बैठकर समझाते हैं– भागवत निकालो, गीता भी निकालो, ये भी निकालो। तुम...निकालेगा ना, दूसरा तो नहीं समझेगा ना! कहाँ है ये अकासुर,बकासुर,फकासुर, ये शिक्लेंने वाला किस्म–2 का अनेक प्रकार का या कृष्ण बैठ करके चक्कर चलाते हैं और हिंसा करते हैं। तो ये समझ में आते हैं ना बच्चों को! नहीं, ये सब झूठ। ये भक्तिमार्ग में सभी झूठ। कृष्ण, देखो कृष्ण को तो कोई हिंसक नहीं कहेगा ना; क्योंकि गाया जाता है ना– अहिंसा देवी–देवता धर्म। अभी अहिंसा सो हिंसक कैसे बनेंगे? सो भी बिचारा बालक सतोप्रधान एब्सल्यूटली, वो हिंसा कैसे करेंगे? तो देखो, कोई समझ है मनुष्यों में? तभी बाप आकर कहते हैं कि ये कितने बेसमझ बन गए। समझाते–2 कितने बेसमझ बनते हैं और उनको समझाते रहते हैं, इतना बहुत समझाते रहते हैं। तो समझदार कौन बनते हैं, इनमें एकदम समझदार? जो एकदम शिवबाबा का समझ करके फट से शिवबाबा का बन जाते हैं। एकदम सब–कुछ सब, जबकि आपका हम सब ले लेते हैं विश्व का मालिकपना, तो फिर हम सब अपना क्यों नहीं लेवें! समझा ना! तो ये होते हैं ना बच्चे! देखो, जभी कोई मरता है ना, तो

ब्राह्मण होते हैं करनीघोर। फिर उनको कोई मिल्कियत थोड़े ही मिलती है। नहीं, उनको क्या देते हैं– पुराना मंझा, पुराना बिस्तरा, पुरानी ये सभी चीज़ वो दे देते हैं। बाकी तो सब अपने पास रख देते हैं। समझे ना! तो यहाँ भी ऐसे ही करते हैं, ये शिवबाबा को सरेण्डर नहीं करते हैं सब–कुछ। उनको कोई बिचारे को पाँच पैसा देंगे, कोई दस पैसा देंगे, हाँ हम शिवबाबा के भण्डारे में डालते हैं। क्यों, भण्डारे में सब क्यों नहीं डालते हो? क्योंकि जिसने/जो ये पहले नंबर में जाता है, वो पहले नंबर में जाता है, तो भण्डारे में सब–कुछ क्यों नहीं डालते हो? क्या–2 भूख मरते, ये भूख मरते हैं! नहीं, ये तो भूख मरते ही नहीं हैं; परन्तु नहीं, ड्रामा में है नहीं ऐसा पार्ट, जो सब–कोई ऐसे भण्डारे में डाले। नहीं, अबलाएँ,कुब्जाएँ,कन्याएँ,माताएँ,भीलनियाएँ, ये, ये तीखी जाती हैं एकदम; क्योंकि अबलाएँ घूसा भी, ये–2 खाती भी यही हैं, मार भी यही खाती हैं विख के लिए। तो बाबा कहते हैं– कामशत्रु है ना बच्चे! 'कामेषु भई क्रोधेषु', काम की आशा पूरी न होगी तो क्रोध आएगा। क्रोध आएगा, उनको मारेंगे। अभी सबके लिए तो बाबा नहीं कहेंगे ना! वो तो बताते हैं सब–कुछ कि कैसे ये होता है ये और होता है सब कल्प पहले (मिसल)। जो कभी कोई लिख देती है बच्ची– अरे बाबा! काम के कारण मैं बहुत मार खाती हूँ। मेरा हड्डी–2 तोड़ दिया है, फलाना। मैं लिख देता हूँ– ये ड्रामा में था तुम्हारा पार्ट, सो वाह! क्या हर्जा है! एक जन्म के लिए अगर तुमको बैठ करके दस्ता बैठकर सीखें, तो भी कुछ भी नहीं है। अरे तुम आधाकल्प के लिए विश्व के (मालिक), वो ही तो बनेगी ना! जब वो मारता रहेगा, 'हाय राम, हाय राम, हाय राम', शिवबाबा को याद करती रहेगी ना! तो पहले नंबर में तो वो जाएगी ना! तभी बाबा कहते हैं ना, बच्चे जब आती हैं ऐसी बच्चियाँ, हम बोला– तुम फिकर मत करो; क्योंकि तुमको जो अगर विकार में भी जाते हैं तो तुम्हारी तो आशा नहीं है ना! उसकी आशा है, वो ही भोग भोगेगा, तुम थोड़े ही भोगेगी। तो उनको मारते रहते हैं, 'हाय राम, हाय शिवबाबा, शिवबाबा'। हाँ, है ना उसमें, हमको नगन करते हैं, मारते हैं। तो दिखलाया भी तो है ना; परन्तु दिखलाया, इसमें तो कोई मनुष्य समझते थोड़े ही हैं यहाँ के बंदर बुद्धि। कुछ भी नहीं समझते हैं। वो और ही लिखते रहते– वाह! ये क्या लिखा है– भारत की पत गंवाते! भारत की पत तुम गंवाय रहे हो ना! विषियस भारत को, तो जो वाइसलेस भारत था, उनको विषियस तुमने बताया ना! तो तुम अपने ऊपर क्यों (नहीं) कहते हो या यहाँ–2 ब्रह्माकुमारियों को क्यों दोष देते हो? वो तो जो है, वो इनमें लिख देते हैं। ऐसे तो सभी लिखते हैं अखबार वाले, कार्टून्स निकालते हैं। हम वही जो इस समय में भारत की है अवस्था, वो हम लिखी हुई है और जो इस समय में भारत की अवस्था है– विनाश काले विपरीत बुद्धि, वो लिखी हुई है। हम कोई नई बात तो नहीं करते हैं। एक्युरेट जो है सो हम लिखाते हैं। इसमें गुस्सा खाने की क्या? तो सब बात को समझाने में, गुस्सा आएगा, गुस्सा आएगा, 2–4 गाली देकर चले जाएँगे या जा करके गुस्सा आएगा, जाकर अखबार में डाल देंगे। तो ये ज़रूर समझना (चाहिए)– कल्प पहले भी अखबार में डाले थे। अभी इनको जितना भड़काएँगे इतना और ही भड़केंगे। है ना बच्ची! कुतरे होते हैं ना, वो भौंकते–2 रहेंगे। तुम उठाएँगे पत्थर तो वो भागता भी जाएगा पत्थर, भौं–2 भी कर। भौं–2 छोड़ेगा थोड़े ही। तो ये दुनियाँ का हाल भी ऐसा है बच्चे। देखो ज़रूर ऐसे ये कहाँ से भला ये आया है– तुम भौंक, मेरे को नींद आवे! तो ज़रूर जभी कृष्ण, अगर कृष्ण ही होता, तो उनके पिछाड़ी भौंकते थे ना! जैसे वो गाली देते थे ना! क्यों गाली देते थे उनको? वाह! बात बोल दिया कि चौथ के चंद्रमा को देखा था; इसलिए गालियाँ। अरे! ऐसे भी कोई बात है, चंद्रमा को देखने से कोई गाली खाएगा! तो बातें जो सुनी हैं सो अभी याद हैं ना! ऐसे तो नहीं कि इस जन्म में जो शास्त्र पढ़े वो कोई न याद है। नहीं, ये सब बातें अच्छी तरह से याद हैं। तो फिर देखो, अभी वो बातें पढ़ने से तो कोई फायद–फायदा नहीं,

न कोई पढ़ेगा; क्योंकि बाप ने आ करके कहा है– ये जो भी कुछ है– यज्ञ,तप,दान,पुण्य वगैरह–2, ये सभी भूसा बुद्धि से निकाल दिओ। है ना! ये गुरुओं को भी अभी गोली मारो। गोली तो मारने की नहीं है; परन्तु शास्त्रवादियों ने लिख दिया है कि गुरुओं को गोली मारो, छोड़ो इनको। लिखा हुआ है ना, जिन्होंने गीता पढ़ी होगी, उनको ये मालूम होगा कि है भगवानुवाच, ये सब जो तुम्हारे गुरू हैं, इन सबको छोड़ो। ये सब तुमको भूसा भरा है। ये तो भक्तिमार्ग है ना! .....आगे एक महाराजा, भई एक वजीर, ठीक। गाया जाता थे– भई, किंग महाराजा–महारानी और–2 वज़ीर। अच्छा, अभी क्या हो गया है, कितने वज़ीर होंगे, पता करो। एक–एक प्रॉविन्स के देखो अस्सी–अस्सी, पचास–पचास। फिर वज़ीर भी कौन–सा? एम.पी., वो भी वज़ीर, मिनिस्टर, एम.एल.ए., वो भी मिनिस्टर। तो हिसाब अगर करेंगे तो ढेर हो जाएँगे। यहाँ तो सतयुग में एक भी नहीं, वरी यहाँ कलहयुग में ढेर। तो ये ढेर बदल हो करके फिर एक भी नहीं होगा, जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। है ना बरोबर! चलो बच्ची, टोली ले आओ।.....अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे, 5000 बरस के बाद फिर से आए मिले हुए। ऐसा कोई कह सकते हैं बच्चे? ना! सर्विसेबुल,वफादार,फरमानबरदार,आज्ञाकारी बच्चों प्रति रूहानी बाप का, बाप व दादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।